Review Of Research

संत कवि निपट निरंजन के काव्य का अनुशीलन

प्रा.भगवान आदटराव
संतोष भीमराव पाटील महाविद्यालय, मंद्रुप,तहसील- द. सोलापुर,जि- सोलापुर .

प्रस्तावना :-

रीतिकाल में हिंदी भाषी क्षेत्र में दरबारी संस्कृति की उपज शृंगार साहित्य फल-फूलता रहा, उसी समय महाराष्ट्र के औरंगाबाद मे 'निपट-निरंजन' नामक सन्त कवि सन्त साहित्य परम्परा को समृध्द कर रहा था। शिवसिंह सरोज ने इस सन्त का परियच इस प्रकार दिया है- "निपट निरंजन स्वामी, सं. १६५० मे जन्मे। यह महाराज गोस्वामी तुलसीदास के समान सिध्द हो गए हैं। इनके ग्रंथों की ठीक-ठीक संख्या मालूम नहीं होती । पुरानी संग्रहीत पुस्तकों में सैंकडो कवित्त हम उनके देखते हैं। हमारे पुस्तकालय में 'शांत सरसी' और 'निरंजन संग्रह' ये दो ग्रंथ इन महाराज के बनाए हुए है। इनकी कविता में बहुत बडा प्रभाव यह है कि मनुष्य कैसा ही काम क्रोध इत्यादि पापों से बध्द हो, इनके वाक्य श्रवण कीतन से निस्संदेह मुक्त हो जाएगा।" श्री सफीउद्दीन सिद्दीकी ने दिल्ली से प्रकाशित एक ऊर्दू साप्ताहिक के लेख में निपट- निरंजन के 'कवित निपटजी के' तथा 'शांत रस वेदांत' ग्रंथ का उल्लेख किया है। निपट कवि का सर्व प्रथम उल्लेख औरंगजेब के समकालीन कवि कालिदास त्रिवेदी के कालिदास हजारा' की पृष्ठ सं. ७२ पर मिलता है। ग्रियर्सन, भिरवारीदास आदि ने भी इस कवि का उल्लेख किया है।

कहा जाता है कि सं. १६८० में निपट का जन्म बुंदेलखण्ड के चंदेरी गाँव में हुआ था।

"संवत सोला सो असी, था गईन का मास।
बुंदेलखण्ड द्विज गौड में, निपट भये प्रकास।।"

निपट के बचपन में ही पिता की मृत्यू हो गयी थी। माता ने ही उसकी परवरिश की। इसलिए माता के प्रति उनके मन में प्रगाढ प्रेम और श्रध्दा रही है। निपट ने सन्यास भी माता की प्रेरणा से लिया और एक सामान्य व्यक्ति से सिध्द पुरुष बन गये। वे स्वयं कहते हैं-

"माता का उपदेश भया, हमने फकीरी लिया,
शहर को छोड के जंगल मन भाई है।
राखे ना छेदाम पास, जपना अलख नाम,
ए नाले में चारो धाम, गोकुल दिखाई है।।
नैनों में नमाज रुजू, आँसूओं का करे वजू,
आहों क कल्मा भजू जो पाईसो छुपाई है।
कै 'निपट निरंजन' सुनो आलमगीर
पहाड सिंग पुरे में अजीब पादशाई है।।"

निपड के औरंगाबाद आने तथा सन्यास लेने के विषय में कई किवंदतियाँ प्रचलित हैं। डॉ. भालचंद्र तेलंग ने कवि नारायण विरचित हस्तलिखित ग्रंथ - श्री गुरूलीलामृत से एक कथा उध्दृत की है, जिसमें निपट हस्तिनापुर से औरंगाबाद आने का संकेत है। कथा इस प्रकर है-

"ग्राम का नाम खडकी, बस्ती जहाँ थोडी। बादशाहा औरंगजेब की दृष्टि में एक चमत्कार दिखाई दिया। व्याघ्र का पीछा जम्बूक कर रहा है। अर्थात् जरा- मरणादि से कातर मन (जम्बूक) गुरू उपदेश - प्राप्त जीवात्मा व्यघ्र का अनुकरण कर रहा है। यह देख वह मन में विचार करने लगा कि यह स्थान प्रसिध्द है। ऐसे स्थल को देखकर ही आलमगीर ने यहाँ अपनी राजधानी बनाई, ग्राम का नाम औरंगाबाद रखा और शहर को विस्तीर्ण किया। यहीं महासिध्द निपट निरंजन है, बेगमपुरे में उनका स्थान है, पर्वत पर जाकर वे तपस्या करते हैं। वे योगाभ्यासी हैं, परमदक्ष है, श्रीराम के चरणों में ध्यान लगाते हैं और उन्हें नित्यानित्य अपरोक्ष ज्ञान प्राप्त है। हस्तिनापुर में एक धनिक साहुकार रहता था उसकी रंभा उर्वशी के समान सुंदर कन्या थी। निपट हस्तिनापुर में भिक्षाटन करते थे। उस साहुकार की कन्या को ऊपर की मंजिल पर देखा तो उन्हें श्रीराम के स्वरूप की झलक सामने नजर आई और

वे ध्यानमग्न हो उसे देखने लगे और कहने लगे कि श्रीराम स्वरूप के समान यह स्त्री मुखे दिखाई देती है। भिक्षाटन के हेतु नित्य इसी प्रकर उस रामरत्न को वे अपने नेत्रों से देखने जाते और रामस्वरूपी उस कामिनी को आनंदपूर्वक देखत रहते। एक दिन उस कामिनी ने निपट की वंदना की और पूछा- 'तपस्वी! आपके मन में जो इच्छा हो मुझे बतलाइए।' निपट ने कहा, मेरी कुछ भी इच्छा नहीं है माता, तेरे रूप में श्रीराम के स्वरूप का आभास मुझे मिलता है।" जब वह स्त्री अपने ससुराल गयी, तब भी निपट उसके पीछे-पीछे हस्तिनापुर छोड वहाँ भी पहुँचे। अन्त मे उस स्त्री ने निपट से समझाया- 'साधुवर ! मेरी इतनी विनंती है कि आप श्रीराम के स्वरुप में प्रीति लगायें, कामिनी स्वरूप इस माया नगरी की गलियों में चक्कर न लगायें। नारी अविद्या की खान है, वह आत्म प्राप्ति के मार्ग में अटका देनेवाला रोडा है। वह नारी तो लोगों को दिया दिखलाकर महानरक का रास्ता पकडा देती है। असत्य, धृष्टता, अतिलोभ, माया, मूर्खता, निर्दयता, अशुचि आदि दोष स्त्री के अंग में सहज निवास करते हैं। यहाँ परमार्थ सिध्दी कैसे? तुम्हे सीताकान्त यहाँ कैसे मिलेंगे? अब स्त्री के रूप का यह मोह छोड शीघ्र ही जानकी वल्लभ की शरण में जाइए। आमरण भी मेरे पास रहेंगे तो आयोध्यानाथ की भेंट नहीं होगी। मेरे घर में तो कामदेव का बसेरा है, यहाँ सीतानाथ की प्राप्त न हो सकेगी। रघुवीर की प्राप्ति के लिए तो एकान्तवास चाहिए, तुम तो यह सब छोडकर मेरे पीछे पड गये हो। लोगों में यह निंदनीय है, बडी लोक निंदा होगी। निपट लम्पट, जारकर्मी, कपटी कहलायेगा' ऐसे सुबोध वचन सुनते ही निपटने तत्काल उस स्त्री को प्रणाम किया और शहर से दूर बाहर पश्चिम दिशा में पहाडी पर एकान्त स्थल देखकर वहाँ नित्य रामचंद्र का जप-तप करने लगे। निपट के इस पूर्ण सद्भाव को देखकर संतुष्ट हो श्री रामचंद्र ने उन्हों अपने दर्शन दिये और निपट को पूर्ण काम कर दिया।

स्पष्ट है कि तुलसी - रत्नावली प्रसंग के समान यह किंवदंती है। डॉ. राजमल बोरा ने 'निपट निरंजन की बानी' में निपट के व्यवस्था के लिए औरंगाबाद आ बसने की संभावना मानी है। वे लिखते हैं- "निपट बाबा औरंगाबाद आने के बाद में औरंगपुरा के निकट एक नाथ मंदिर के समीप रहने लगे। जीविकोपार्जन हेतु तारकसी (चमडे) का व्यवसाय आरंभ किया। व्यवसाय ने कराखाने का रूप किया। बीस-तीस मजदूरों के साथ अपना कारोबार करते थे। कहते हैं कि निपट बाबा की माता ने मृत्यु से पूर्व निपट बाबा को उपदेश दिया। कहा- "बेटा यह देह नश्वर है, यह जीवन क्षणभंगुर है। अत: मनुष्य को जो यह मानव शरीर मिला है, उसके प्रयोजन को जानो और तद्नुसार अपने कर्तव्य का निर्णय करो। जो कहती हूँ, उस आचरण करो। यही मेरा उपदेश है।" माता की बात को निपट बाबा ने बडे ध्यान से सुना। माता ही उनके लिए सब कुछ थी। उसी वर्ष सवंत १७३४ में (१६७७ ई. थे) उनकी माता स्वर्ग सिधार गई। उस समय निपट बाबा की अवस्था ५४ वर्ष की थी। किसी की सहायता नहीं मिली। निराश और हताश हो घर के कारखाने की लकडियाँ एकत्रित की और माता का अंतिम संस्कार किया। मन में वैराग की भावना बस गयी। माता के शव की राख को विभुती मान लिया और अपने शरीर को लगायी और निरंतर योगाभ्यास किया। कहते हैं लगभग तीन वर्ष बाद जब निपट बाबा वटवृक्ष के नीचे ध्यान में बैठे हुए थे, उस समय साक्षात बवधूत श्री भगवान दत्तात्रय प्रकट हुए। दर्शन दिया और प्रसन्न होकर कहा- "गुरू पोर्णिमा को देवगिरी (दौलताबाद) होनेवाले संत समागम में सम्मेलित हो जाओ।"

दत्ता आज्ञानुसार निपट देवगिरी के सन्त सभागम में पहुँच गये। उन्हें 'निपट' नाम इसी सन्त समागम में प्राप्त हुआ। निपट का मूल नाम अज्ञात है। 'निपट' नामकरण की कथा इसी सन्त समागम के साथ जुडी है। कहते हैं संतों के मेले में जो प्रसाद मिला वह बडा अजीब था-निराला था। गोम, बिच्छू, साँप, गिरगुट, खेकडा आदि को कढाई में पकाया गया और सन्तों परोसा गया। निपट पहले तो अचकचाएँ, लेकिन गुरू चर्पटनाथ की आज्ञा हुई तब सब प्रसाद खा निपट दिया। इसीलिए गुरु ने उनका नाम 'निपट' रख दिया।

निपट के साथ निरंजन नाम भी जुडा। निरंजन निपट बाबा का अनन्य शिष्य था। निपटबाबा की वाणी को निरंजन ने ही लिपिबध्द कर सुरक्षित रखा। निपट के गुरु चर्पटनाथ माने जाते हैं। इस दृष्टि से निपट नाथ पंथ से सम्बन्धित सन्त माने जाने चाहिए। लेकिन निपट सचमुच निपट थे, वे किसी एक पंथ के पट में बंद नहीं थे। जैसे कि डॉ. राजमल बोरा ने लिखा है - "निपट बाबा के गुरू चर्पटनाथ थे किन्तु निपट बाबा न तो पूरी तरह से नाथ पंथी है और नही पूरी तरह से जनार्दनस्वामी की तरह दत्त सम्प्रदाय से जडे है। दोनों का मिला जुला रूप उनमें दिखाई देगा। दूसरी बात यह है कि निपट बाबा सूफियों का सत्संग भी उसी तरह करते रहे हैं।"

'निपट की बानी', 'आलमगीर से संवाद', 'नीपट वजीर संवाद', 'अलीफनामा', आदि के सबंधी औरंगजेब की 'निपट-भेट' से माना जाता है। इस संबंध में कई किवंदतियाँ हैं, कई चमत्कारपूर्ण कहानियाँ हैं, जिसमें ज्ञानेश्वर की तरह दीवार चलाना, सुक्ष्म शरीर धारण करके बेर लाना आदि अधिक ख्यात हैं। आलमगीर की निर्भिक रूप में उसी के सामने कटू आलोचना निपट ने की। वह कहते हैं:

"आलम में आलम तू आलम को देख जरा,
आलम में जालिमों को आलिम का जाम है।
आलम में आनकर आलिम इलम नहीं,
आलम को पैदा किया उसी का ये ही काम है।।
आलम में कई, पादशाह हुए, होंगे आगे,
आलम का आलमूल, गेब एक नाम है।
कै 'निपट निरंजन' सुनो आलमगीर,

आलम में भूला सो ही नमक हराम हैं।।"

आलमगीर बादशहा को बाबा की सिध्दियों ने प्रभावित किया था। उन्होंने बाबा के साथ एक सप्ताह बिताया। आलमगीर बाबा से सवाल करता था और बाबा उत्तर दिया करते थे। यह सारा संवाद कविताओं में है। ऐसे ११४ कवित मिलता हैं। इन कविताओं में धार्मिक आडम्बरों पर भी निपट ने तीखे प्रहार किये है।

इसके साथही उन्होंने मूर्ति पूजा, पोथी-पढन, तीर्थ-यात्रा, मंदिर-मस्जिद आदि के आडम्बरें पर भी निपट ने प्रहार किये हैं। ऐहिक जिवन की क्षणभंगुरता और उसके पीछे पडे जीवों की त्रासदी को व्यक्त करते हुए निपट कहते हैं।उसकी इस सत्ता की लालसा पर कटाक्ष करते हुए निपट कहते हैं-

"कहाँ तेरो तक्त ताज, कहाँ पे मोगल राज,
कहाँ पर महल, कहँ पर अटारी है।
कहाँ तेरो फौज फाटा, कहा पे खजाना झूठा,
कहँ दिल्ली शहंशाही, हाथी पे सवारी है।।
कहाँ तरे किल्ले ठाणे, कहाँ तेरे तोफखाने,
कहाँ पे जनाने म्याने कहां दरबारी है।
के निपट निरंजन' सुनो आलमगीर,
कहाँ पर रइना है, कहाँ की तैयारी है।।"

धन सम्पदा, ऐशोआराम से दूर अपनी 'फकीरी' में मस्त निपट औरंगजेब को यहाँ तक कहता है-

"महलों के फानूस नहीं कुटि फलंस फूसन ही,
शाल मखमलन ही गोदडी संभाली है।
रक्षक लाखो जबान यहाँ रखवाले खान,
बिरयानी पुलाब नहीं, नीम की निंबोली है।।
सोना-चांदी अशरुीया भरे हैं खजाने मियाँ,
मन सब जहागीर जंगल हरि थाली है।
के 'निपट निरंजन' सुनो आलमगीर,
आलमगीर शहनशाही फकीरों की झोली है।।"

निपट की सिध्दी तथा निस्पृहता को देखकर आलमगीर चकित हो गया। अलमगी ने निपट की भाँति-भाँति परीक्षा ली, प्रलोभन दिये। अपने वजीर के द्वारा राजसत्ता का आतंक भी दिखाने की कोशिक की, लेकिन निपट अपनी फकीरी में मस्त रहे। निरंजन - वजीर संवाद के एक दोहे में निरंजन कहते हैं-

'बादशाही छोड दे, फकीरों का सुन ग्यान,
निपट सब ही निपट के, करे जगत कल्याण।।

जैसे कि इसके पूर्व कहा गया है निपट नाथपंथी होकर भी अन्य धर्म और पंथो से जुडे हैं। औरंगाबाद में सूफी सन्तों निवास रहा है। निपट बाबा सूफियों का सत्संग भी करते रहे हैं। औरंगजेब के सम्पर्क में उनकी बानी का रूप देखें तो वे पूरी तरह 'फकीर' के स्वरूप में प्रतीत होते हैं। फकीर चालीसा के चालीस दोहे तथा आलीफनामा और नसीहतनामा जैसी रचनाओं में वे मौलवियों की बानी में बोलने लगते हैं। औरंगजेब को इसलिए कहना पडा था- 'ऐसा जलाली फकीर मैंने नहीं देखा।' निपट की रचनाएँ, महाराष्ट्रीय सन्तों की भाँति समन्वयवादी हैं। नाथ, सन्त, तथा सुफी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का साक्षात्कार निपट की बानी में होता है। जैसे

१. गुरु महिमा :

"शरण आये की राखे लाज ऐसे गुरू महान।
जो मँगे गुरू द्वार मिले, ताको करे कल्याण।।
पिट निरंजन गुरू चरनन के तन मन से लपटाना।।"

२. ज्ञान महिमा -

"सन्तों ग्यान बना किरपान। गुरूभक्ति के ग्यान।।
काम, क्रोध, शट रिपु जेधा। लडे घेर मैदान ।।
दया छमा की ढाल बनाके। जीते शूर सुजान।।
गुरू क मंत्र जपत है निपट।। अलख पुरूष निर्बान।।"

३. नाम स्मरण महिमा -

"राम जप कृष्ण जप कोई भी तो नाम जप,
जपे जीवे शिव जो ना जपे नहीं राम तब।
परा से पश्यन्ती जप मध्यमा वैरवरी जप,
जागत मे जपे नही सपने में जपे कब।।
वेदशास्त्र भागवत कहे सारे साधु संत,
नर तन पाया अन्त भूला गर्भ कौल सब।
कै निपट निरंजन, नित भोजन भजन नहीं,
चार जने कंधे लिये जावे न जपेगा जब।।"
\

४. सत्संग महिमा :

"भटकत जग अज्ञान में, अटकत है अभिमान।
सटकत है सत संग से, निपट सो लटकत जान।।"

५. सगुण - निर्गुण भेद का खण्डन :

"सगुण-निर्गुण एक ही जानो क्यो नाएक भरमाया जी।
माया से ही दोनों भासे सो सामाय की छाया जी।।"

६. परमतत्त्व की अनन्यता :

"राजा और प्रजा रूठे मित्र भाई रूठे,
पंचात में चौधरी रूठे और क्या बताईये।
पुत्र और कलत्र रूठे, घर में सो स्त्रियाँ रूठे,
धनी कंगला रूठे, रूठन, में न जाईये।।
पास और पडोसी रूठे, गोत्र में तो बाम रूठें
सब ही कुटुंब रूठे मन में न लाईए।
कैं निपट निरंजन जब जग रूठे क्यों न
पर दीनानाथ कहि तै मत रूठा चाहिए।।"

७. सन्त की पहचान :

'फकीरी चालीसा' के चालीस दाहों में से अधिकांश दोहो में सन्त - फकीर की लक्षणों का वर्णन किया गया है। जैसे-

"फफा से फाका करे क का कीना कीर।
र रा से रियाज करे ताका नाम फकीर।।"

८. जाती-धर्म-पंथ गत विषमता का विरोध :

१. "जात जाने पात जाने गोत जाने
घूत औश्र छात जाने सत्य को बिसारा है।"

९. धार्मिक कर्मकांड और पाखण्डों का विरोध :

१. अडसळ तीरथ घर बसै, चारो धाम सुहाय।
भटक निपट क्यों फिरे, उलट पुलट घर आय।।

कुल मिलाकर नाथ, संत तथा सुफी सन्तों की समन्वित परम्परा का विकास निपट की रचनाओं में देखा जा सकता है। यह समन्वय महाराष्ट्र की भक्गित- परम्परा की देन है। महाराष्ट्र में सगुण - निर्गुण, सन्त - भक्त आदि का विभाजन नहीं है। यहाँ नाथ, महानुभाव, दत्त, समर्थ तता वारकरी संप्रदाय रहे हैं, लेकिन सांप्रदायिक कट्टरता इनमें कभी नहीं रही है। निपटने भी इसी परंपरा का निर्वाह किया है। उनकी भाषा हिंदी-ऊर्दु दोनों के बीच की कडी है। उसमें दख्खिनी का पुट भी मिलता है। उनकी भाषा और छंद प्रयोग के संबंध में भक्ति साहित्य के मर्मज्ञ और भाषा विज्ञान के मूर्धन्य विद्वान डॉ. बोराजी ने लिखा है- "निपट बाबा ने जिन छंदों का प्रयोग किया है, वे प्रायं रीतिकालीन है। कविता, सवैये और दोहे उन्हेंने लिखे हैं। यह छंद ब्रजभाषा के प्रिय छंद है। खडी बोली में भी इस प्रकार के छंदो का उपयोग होता रहा हो किन्तु उसके अधिक उदाहरण नहीं मिलते। इन छंदो के प्रयोग के कारण निपट बाबा की बानी को प्रमाणिक मानना चाहिए। बानी पुरानी है। निपट बाबा ने अपने काल की भाषा का और अपने काल के बहु प्रचलित छंदो का उपयोग किया है। वे दोनों प्रकार की भाषा का व्यवहारा करते हैं। ब्रजभाषा वाला रूप उनके कविता, दोहों और सवैयों में है और दूसरी ओर वे खडीबोली में भी कविता लिखते हैं। एक प्रकार से नाथ योगियों की भाषा-लोकभाषा रही है। गोरखनाथ के समय से यह परंपरा चली आ रही है। इसी परंपरा में निपट बाबा की बानी आती है। निपट बाबा की भाषा लोकभाषा है। औरंगबाद का स्थानीय रूप उनकी भाषा में खुलकर व्यक्त हुआ है। सामान्य जनता में अध्यात्म के बोध को हृदयभंग कराने हेतु निपट बाबा ने सहज और सीधी भाषा का उपयोग किया। फटकारनेवाली तथा खरी- खोटी सुनानेवाली उनकी भाषा है। निपट बाबा ने १६९८ ई. में समाधि ली। इस संबंध में निरंजन एक दोहा है-

सत्रा सौ पंचावने, प्रमोद विक्रम जान।
अगहन वदी एकादशी, निपट भये निर्वान।।"

डॉ. बाबासाहाब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय के पीछे निपट बाबा की समाधी है। अपने पच्चीस साल के औरंगाबाद के निवास में विपुल मात्रा में साहित्य लिखा। लेकिन अधिकांशतः वह मौखिक रूप में पीढि दर पिढी दर पीढी चलता रहा है। डॉ. राजमल बोरा जीने निपट निरंजन के भक्तों से प्राप्त रचनाएँ 'निपट निरंजन की बानी' शीर्षक से सम्पादित किया है। शिवसिंह सरोज, ग्रियर्सन आदि प्रारंभिक हिंदी साहित्योतिहासकारों ने 'निपट बाबा' की रचना का महत्त्व जाना था, लेकिन परवर्ती इतिहासकारों ने नामोल्लेख भी नहीं किया है। हिंदीतर क्षेत्रों में सृजित इस तरह का साहित्य हिंदी की अमूल्य धरोहर है, उसका विस्मरन नहीं होना चाहिए।